Course-- B.A, Education Hons ,part --3

Paper-7th, Educational Thought &practice
& Adult Education

Prepared by--- Dr Meena Kumari

Topic-- Educational Philosophy of
Friedrich Froebel

--+---------- +++++++----------

फ्रेडरिक फ्रोबेल के शिक्षा दर्शन

(1)प्रस्तावना --- फ्रेडरिक फ्रोबेल एक महान शिक्षा शास्त्री तथा दार्शनिक थे .!उनका शिक्षा का दर्शन वर्तमान में भी पूरे विश्व में प्रासंगिक है! वह किंडर गार्डन यानी बाल उद्यान की अवधारणा दिए थे! किंडर गार्डन आज विश्व के लगभग सभी देश में उसी रूप में कार्य कर रहा है ! उनकी शिक्षा संबंधी विचारधारा उनकी रचना ,'एजुकेशन एंड मैन' में मिलते हैं! दार्शनिक विचारधारा आदर्शवादी दर्शन तथा विकासवाद से प्रभावित था! वह आज भी शिक्षा के क्षेत्र में एक अग्रणी दार्शनिक के रूप में जाने जाते हैं।

(2) फ्रोंबेल के दार्शनिक विचार --- फ्रोबेल एक आदर्शवादी दार्शनिक थे । उनकी जितनी विचारधाराएं है, वह आदर्शवादी विचारों से मेल खाती है। मनुष्य की शक्तियां, बुद्धि, संस्कृति, कला ,नैतिकता तथा धर्म के कारण वह अन्य जानवरों से श्रेष्ठ है। अतः उन्होंने सत्यम, शिवम ,सुंदरम की अवधारणा पर मनुष्य जीवन को उच्चतम विशेषताओं से पूर्ण करने की बातकी थी।उनका विश्वास था कि संपूर्ण पदार्थ, मनुष्य ,प्रकृति के सनातन नियम अर्थात एकता के नियम से स्थित है ।यह एकता तीन तत्वों से प्राप्त होती है उत्पत्ति की एकता, सार तत्व की एकता तथा उद्देश्य की एकता। सब वस्तुएं भी देवी शक्ति या ईश्वर से ही उत्पन्न होती है ।इस प्रकार अनेकता में एकता और एकता में अनेकता का भाव विद्यमान रहता है। फ्रोबेल का मानना था कि जितनी भी वस्तु इस पृथ्वी पर है वह सब वस्तुएं प्रकृति द्वारा शासित होती हैं ।यह नियम प्रकृति में, आत्मा में तथा इन दोनों के संयोजक जीवन में समान स्पष्टता तथा विलक्षणता से माना गया । फ्रोबेल ने विकास का सिद्धांत दिया था जिसके अनुसार संपूर्ण विश्व विकास का ही एक क्रम है। जिस की गति किसी विशेष योजना या लक्ष्य के अनुसार निम्न स्तर से उच्च स्तर की ओर होता है ।अतः इस योजना का लक्ष्य के पीछे कोई योजना बनाने वाला अथवा लक्ष्य निर्माता भी है ।फ्रों बेल ने इस

लक्ष्य निर्माता को ईश्वर या देवी एकता के नाम से पुकारते हैं ।से स्वीकार करते हैं की अंदर की दुनिया को बाहरी प्रदर्शनों द्वारा जाना जा सकता है और उसका उच्चतम विकास भी बाहय प्रभावों द्वारा ही संभव है ।उन्होंने ईश्वर ,आत्मा ,पदार्थ तथा मनुष्य के अंश का ज्ञान बाहय प्रदर्शनों द्वारा प्राप्त करने की बात की है ।शिक्षा में विकास के प्रयोग के अंतर्गत उन्होंने शिक्षा को भी विभेदों का निराकरण करके सब वस्तुओं में समन्वय स्थापित करके विश्व के श्रष्टा का आभास कराने के रूप में तथा उचित वातावरण प्रस्तुत कर मनुष्य के अंदर सारी शक्तियों का विकास करने की बात की है।

(3)फ्रोबेल के शैक्षिक विचार --- फ्रोबेल शिक्षा को विकास की एक प्रक्रिया मानता है। उनके अनुसार शिक्षा अपने उच्चतम स्तर पर विकास की प्रक्रिया को जानना या अनुभव करना है। जिस प्रकार एक बीज में संपूर्ण वृक्ष का रूप निहित रहता है।उसी प्रकार बालक में संपूर्ण व्यक्तित्व तथा सर्वांगीण विकास की रूपरेखा रहता है । उन्होंने लिखा है कि शिक्षा को, मनुष्य को स्वयं के संबंध में स्पष्टता प्राप्त करने के लिए अग्रसर एवं निर्देशित करना चाहिए! जिससे वह प्रकृति का सामना तथा ईश्वर के साथ अपना समन्वय स्थापित कर सके।

१) शिक्षा का उद्देश्य-- फ्रोबेल के अनुसार शिक्षा द्वारा बच्चों को इस बात का ज्ञान कराना है कि विभिन्न पदार्थों में एक एकता तथा समन्वय निवास करती है और सभी सजीव एवं निर्जीव पदार्थ दैविक उद्देश्यों को पूर्ण करने तथा आत्म ज्ञान तथा श्रेष्ठता पूर्ण व्यक्तित्व की प्राप्त करने के लिए एक माध्यम है। फ्रोबेल इस बात पर भी बल दिए है कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को भक्ति पूर्णशुद्ध, कलंक रहित तथा पवित्र जीवन की प्राप्ति कराना है। शिक्षा का कार्य मनुष्य को स्पष्टता का मार्ग दिखाना है जिससे वह प्रकृति का सामना करने तथा ईश्वर से समन्वय प्राप्त करने में सफल हो सके।

२) पाठयक्रम ---फ्रोबेल के अनुसार पाठ्यक्रम के अंतर्गत चार अध्ययन क्रम होना चाहिए --

>>धर्म तथा धार्मिक निर्देश

>>प्राकृतिक विज्ञान तथा गणित

> भाषा एवं

»कला

फ्रोबेल धर्म और धार्मिक निर्देशों को एकता तथा ईश्वर संबंधित भावनाएं प्रदान करने के लिए पाठ्यक्रम में इन्हे रखे थे उनके अनुसार प्राकृतिक विज्ञान ,गणित व्यक्तिगत विकास की ओर संकेत करता है ।साथ ही बच्चों को आध्यात्मिक अंतर्दशा तथा विकास का ज्ञान प्राप्त करते हैं। ऐसे में कला, चित्र, मूर्ति ,संगीत, बच्चों की अभिव्यक्ति को उत्तम रूप प्रदान करती हैं। इस प्रकार फ्रोबेल एकता, व्यक्तिगत आस्था, व्यक्ति संबंधी विचार प्रदान करके उसको विकास की अवस्था तक तैयार करने की बात करते हैं।

३)शिक्षण विधि --- फ्रोबेल का कथन है कि शिक्षा का उद्देश्य उसमें निहित शक्तियों का प्रकटीकरण करना है। इसको ध्यान में रखते हुए उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण विधि बताएं जो निम्न वत है
» आत्म क्रिया -- इसमें बच्चे अपनी प्रवृत्तियों को समझ कर प्रेरणा तथा भावना को पूर्ण करने के लिए स्वयं अपने मन से सक्रिय होकर काम करते हैं । अतः यदि उसे उसके अनुसार काम करने दिया जाए तो वह अपने व्यक्तित्व का विकास और वास्तविक प्रयोग कर सकता है ।पर यह आवश्यक है कि उसे अपनी सक्रियता के लिए स्वतंत्र वातावरण दिया जाएm। सब लिखे हैं अनंत धाम की मांग करता है।

»सामाजिक क्रियाएँ -- फ्रोबेल के अनुसार शिक्षण पद्धति का मुख्य आधार सामाजिक क्रियाएं ही है।उनका मानना था की आत्म क्रिया की अनुभूति सिर्फ और सिर्फ सामाजिक वातावरण में ही संभव है। इसलिए वह बच्चों को अकेले ना रखकर समाज में रखने की बात करते हैं ।अतः उन्होंने समाज को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कारक माना है और अपनी शिक्षण विधि में सामाजिक क्रियाओं को शामिल करने की वकालत की है।
» खेल --- उनके अनुसार शिक्षा प्राप्ति का महत्वपूर्ण साधन खेल है । बच्चों की खेल में सहज रुचि होती है और वह खेल के दौरान अपने स्वभाविक प्रवृत्तियों को प्रकट करता है। इस तरफ से बच्चे खेल के द्वारा अपने सर्वोच्च रूप का विकास कर सकता है। वह खेल के दौरान आत्म क्रिया करता है जिससे उसके अंदर प्रसंता, स्वतंत्रता संतोष तथा बाह्य जगत से शांति स्थापित करने के गुण का विकास होता है।

४) अनुशासन --- फ्रो बेल का विश्वास था की अनुशासन द्वारा ही आत्मज्ञान तथा आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त की जाती है ।अतः वह अपने विद्यालय किंडर गार्डन पा,में शिक्षक पर छात्रों के अनुशासन संबंधित महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व डालते हैं ।शिक्षक को अपने छात्रों में प्रेम ,सहानुभूति ,नम्रता ,सहयोग तथा आज्ञाकारिता जैसे नैतिक गुणों का विकास करना चाहिए। बालकों को सीमित स्वतंत्रता प्रदान करने की बात की है तथा शिक्षकों द्वारा उन पर कुछ नियंत्रण होना आवश्यक है ।उनका मानना था कि बच्चों पर नियंत्रण होना आवश्यक है परंतु उन्हें शारीरिक दंड नहीं देना चाहिए और उनके अंदर पारस्परिक सहयोग और सद्भावना जगाना चाहिए।

(4) फ्रोबेल तथा किंडरगार्टन -- फ्रोबेल ने अपने शिक्षा संस्थान का नाम किंडर गार्डन रखा था ।किंडरगार्टन शब्द जर्मन शब्द है जो दो शब्दों से मिलकर बना है किंडर अर्थात बच्चे तथा गार्टन का अर्थ उद्यान। इस प्रकार किंडरगार्टन का अर्थ होता है बच्चों का उद्यान। फ्रोबेल ने शिक्षक को माली की उपाधि दी है जो बच्चों को देखभाल करें और उसके स्वभाविक विकास में उसकी सहायता करें और उसे स्वतंत्र तथा उपयुक्त वातावरण निर्माण करके बच्चों को का स्वभाविक विकास में योगदान दे सकें । वे विद्यालय को समाज के लघु रूप में देखते थे और सामाजिक क्रियाओं द्वारा ही बच्चों की विकास की बात करते थे । बचपन के प्रति उनका असीम प्रेम होने के कारण ही उन्होंने अपने जीवन को बच्चों के प्रति समर्पित कर दिए थे ।किंडर गार्डन विधि में सामाजिक एकता पर बहुत बल दिया जाता है।बच्चों का प्रशिक्षण भी देने की बात उन्होंने की है और वह बतलाए कि कैसे कार्य करें और विधियों का निरीक्षण कैसे किया जाए ताकि वह अपने उत्तरदायित्व को अधिक प्रभावशाली ढंग से निर्वहन कर सके। किंडरगार्टन पद्धति आधुनिक शिक्षा की एक महत्वपूर्ण पद्धति है लगभग विश्व के सभी देशों में इस शिक्षा प्रणाली को अपना लिया गया है ।छोटे बच्चों को इस पद्धति के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था है ।विद्यालय को ऐसा बनाया जाता है ताकि बच्चे आकर्षित होकर आनंददायक तरीके से शिक्षा हासिल कर सके ।एक सामाजिक संस्था के रूप में भी समझा जाता है जहां बाल केंद्रित शिक्षा पर बल दिया जाता है।

इस तरह हम देखते हैं की यह पद्धति तथा फ्रोबे ल का शिक्षा दर्शन आज के दिन भी उतना ही प्रासगिक है जितना अपने प्रारंभ में होगा ।इस शिक्षा दर्शन का बहुत सारे देन है जिसमें बाल केंद्रित शिक्षा, शिक्षण का खेल विधि ,सामाजिक क्रिया पर जोर देना इत्यादि ।